OM-19 - 2020 FINAL FILE_Page 1 and 2 28/12/2020 11:29 AM Page 4

डर व चिंता के माहौल में सेवा भाव देगा सुकून की ऊर्जा

ब्र.कु. शिवानी,
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

बच्चे हर सेवा खेल समझकर करते हैं क्योंकि उनमें अहम नहीं होता। पवित्रता और विनम्रता उन्हें अहमहीन बनाती है।

जब परिस्थिति आती है तो उसके साथ हमारे अंदर सहनशक्ति, अपने आप में बदलाव लाने की शक्ति स्वतः आ जाती है। ये सबूत है कि ये सारी शक्तियां हमारे अंदर ही हैं। हम सिर्फ इनका इस्तेमाल नहीं कर रहे थे।

बचपन से सिखाते हैं कि एक हाथ से दान करो, तो दूसरे को पता न चले। मतलब किसी को दिखावे के लिए हम सेवा नहीं कर रहे।

सेवा करने का एकमात्र उद्देश्य देना होता है। इसलिए बचपन से सिखाया जाता है कि एक हाथ से दान करो, तो दूसरे हाथ को पता न चले। मतलब किसी को दिखावे के लिए, किसी से कुछ पाने के लिए, हम सेवा नहीं कर रहे। तभी हमें सेवा की शक्ति मिलती है। गुप्त सेवा मतलब निःस्वार्थ सेवा। यदि हम निमित्त भाव रख निर्माण भाव और निर्मल वाणी से सेवा करेंगे तो इससे हमारी आत्मा की शक्ति बढ़ेगी और जिनकी हम सेवा कर रहे हैं उनकी भी शक्ति बढ़ेगी। सिर्फ खाना खिलाना, घर का काम करना या बाहर जाकर औरों को खाना खिलाने की सेवा नहीं हो रही, बल्कि खाना खिलाते सुकुन और शक्ति देने से सेवा हो रही है। यदि आपने अच्छे भाव से दिया तो आपकी मंशा आपके खाने के साथ सामने वाले को मिलती है। आपके द्वारा दिया हुआ धन सामान लाता है लेकिन आपकी शुद्ध मंशा आत्मा की शक्ति बढ़ाती है। तो इससे दो चीज़ें साथ चल रही हैं। एक जो हम बाहर कर रहे हैं और दूसरी जिस भावना से कर रहे हैं। आज हम चिंता और डर के माहौल में जी रहे हैं, तो हमें खाने के साथ उनको सुकुन की ऊर्जा भी देनी है। जब आप लोगों को भोजन खिलाएं, तो इस भाव से कि हम परमात्मा का प्रसाद खिला रहे हैं।

हमें चिंता नहीं करनी है क्योंकि इससे सेवा की अपोजिट एनर्जी चली जाती है। हमें समाज से डर और चिंता खत्म करनी है। जो निमित्त होगा उसके मन में ये बात नहीं आएगी कि कल आटा कहां से आएगा, धन कहां से आएगा। आप सिर्फ यही कहना कि मैं परमात्मा का निमित्त मात्र सेवाधारी हूँ, वो किसी न किसी को भेज देगा और सेवा हो जाएगी। जब हमारी मंशा अच्छी होती है तो पता नहीं कहां-कहां से लोग आते हैं और सेवा हो जाती है।

आजकल देखो छोटे-छोटे बच्चे भी खाना बना रहे हैं और सेवा कर रहे हैं। वही छोटे-छोटे बच्चे जिनके लिए उनके पेरेंट्स कहते थे कि ये तो कुछ करते ही नहीं है। आज वही बच्चे आटा गूंथ रहे हैं, रोटी बना रहे हैं, केक बना रहे हैं, झाड़ू-पोछा कर रहे हैं, गार्डन ठीक कर रहे हैं। जब परिस्थिति आती है तो उसके साथ हमारे अंदर सहनशक्ति, अपने आप में बदलाव

लाने की शक्ति स्वतः आ जाती है। जो कि ये सबूत है कि ये सारी शक्तियां हमारे अंदर ही हैं। हम सिर्फ उनका इस्तेमाल नहीं कर रहे थे। ये बच्चे आज इतनी सेवा क्यों कर रहे हैं क्योंकि इस समय हवा में सेवा के वायब्रेशन हैं।

बच्चे हर सेवा को खेल समझकर करते हैं क्योंकि उनके अंदर अहम नहीं होता। उस बच्चे ने अपने जीवन में अभी कुछ प्राप्त नहीं किया है। वो पवित्रता और विनम्रता उन्हें अहमहीन बनाती है। ये जो बच्चे इस समय अपने पेरेंट्स की सेवा कर रहे हैं, यह हमें सबूत देता है कि अगर हम बच्चे को कुछ सिखाना चाहते हैं, उनमें अच्छे संस्कार डालना चाहते हैं तो इसका सबसे आसान तरीका है कि बच्चे को शुरूआत से ही ये सबकुछ सिखाना शुरू कर देना चाहिए।

कई बार पेरेंट्स कहते हैं कि बच्चे ध्यान नहीं करते, योग नहीं करते, उन्हें ये सबकुछ सिखाने का आसान तरीका है कि आस-पास के लोग ये करना शुरू कर दें तो उन्हें देखकर बच्चे अपने आप शुरू कर देंगे। और दूसरी बात कि बच्चों में बड़ों की अपेक्षा एडजस्ट करने की शक्ति ज़्यादा होती है। क्योंकि अभी उनके संस्कार बहुत नरम होते हैं, जिन्हें कैसे भी ढ़ाल सकते हैं। तो बच्चों के अंदर कोई भी परिवर्तन लाना सहज हो जाता है। घरेलू कार्यों में सहायता करना भी सेवा है। तो बच्चे घर के छोटे-छोटे कार्यों में सहायता करके भी सेवा का बल जमा कर लेते हैं।

माँ के गर्भ में जो बच्चा या जो आत्मा होती है, उसके ऊपर पेरेंट्स के वायब्रेशन का सबसे ज़्यादा प्रभाव पड़ता है। बच्चे बड़े के वायब्रेशन को बहुत जल्दी कैच करते हैं। तो उन पेरेन्ट्स को इस समय बहुत ध्यान रखना होगा कि मन में डर, चिंता के ऐसे कोई विचार नहीं लाने हैं, जिसका प्रभाव उस बच्चे पर पड़ रहा हो। आप उनको सिर्फ यही वायब्रेशन भेजिए कि आप बहुत सुंदर दुनिया में आने वाले हो, देखो सब कितना सहयोग करते हैं, हरेक एक-दूसरे के लिए हैं, सेवा भाव सबके अंदर कूट-कूट कर भरा है, हरेक परमात्मा का फरिश्ता है। आप भी भगवान का एक फरिश्ता हो जो हमारे घर में आ रहे हो। बस ऐसा ही सोचना, बोलना है। जब वो बच्चा आएगा तो इस सृष्टि के लिए एक फरिश्ता आएगा।

कथा सरिता

एक नगर में रहने वाले एक पंडित जी की ख्याति दूर-दूर तक थी। पास ही के गाँव में स्थित मंदिर के पुजारी का आकस्मिक निधन होने की वजह से, उन्हें वहाँ का पुजारी नियुक्त किया गया।

एक बार वे अपने गंतव्य की ओर जाने के लिए बस में चढ़े, उन्होंने कंडक्टर को किराए के रुपये दिए और सीट पर जाकर बैठ गए।

कंडक्टर ने जब किराया काटकर उन्हें रुपये वापस दिए तो पंडित जी ने पाया कि कंडक्टर ने दस रुपये ज़्यादा दे दिए हैं। पंडित जी ने सोचा कि थोड़ी देर बाद कंडक्टर को रुपये वापस कर दूंगा।

कुछ देर बाद में विचार आया कि बेवजह दस रुपये जैसी मामूली रकम को लेकर परेशान हो रहे हैं, आखिर ये बस कंपनी वाले भी तो लाखों कमाते हैं, बेहतर है इन रुपयों को भगवान की भेंट समझकर अपने पास ही रख लिया जाए। वह इनका सदुपयोग ही करेंगे। मन में चल रहे विचारों के बीच उनका गंतव्य स्थल आ गया। बस से उतरते ही उनके कदम अचानक ठिठके, उन्होंने जेब में हाथ डाला और दस का नोट निकाल कर कंडक्टर को देते हुए कहा, "भाई, तुमने मुझे किराया काटने के बाद भी दस रुपये ज़्यादा दे दिए थे।"

कंडक्टर मुस्कुराते हुए बोला, "क्या आप ही गाँव के मंदिर के नए पुजारी हैं?" पंडित जी के हामी भरने पर कंडक्टर बोला,"मेरे मन में कई दिनों से आपके प्रवचन सुनने की इच्छा थी, आपको बस में देखा तो ख्याल आया कि चलो देखते हैं कि मैं अगर ज़्यादा पैसे दूँ तो आप क्या करते हो... !

अब मुझे विश्वास हो गया कि आपके प्रवचन जैसा ही आपका आचरण है। जिससे सभी को सीख लेनी चाहिए" बोलते हुए, कंडक्टर ने गाड़ी आगे बढ़ा दी।"

पंडित जी बस से उतरकर पसीना-पसीना थे। उन्होंने हाथ जोड़कर भगवान का आभार व्यक्त किया, "प्रभु तेरा लाख-लाख शुक्र है जो तूने मुझे बचा लिया, मैंने तो दस रुपये के लालच में तेरी शिक्षाओं की बोली लगा दी थी। पर तूने सही समय पर मुझे सम्भलने का अवसर दे दिया।"

कभी-कभी हम भी तुच्छ से प्रलोभन में आकर अपने जीवन भर की चरित्र पूंजी दांव पर लगा देते हैं। और कहते भी हैं ना स्वास्थ्य गया तो कुछ गया और चरित्र गया तो सबकुछ गया।

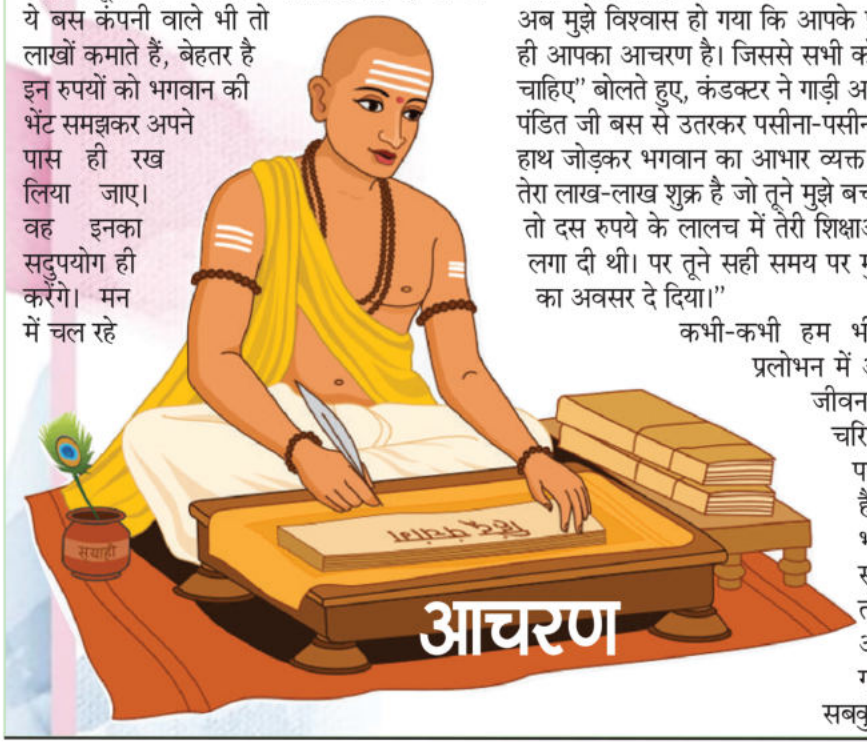

सिरोही-राज.। सिरोही के महाराजा रघुवीर सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अरुणा दीदी,सिरोही, ब्र.कु. दीपक व ब्र.कु. चंदन,शांतिवन तथा अन्य।

ऐसे थे ब्रह्मा बाबा....

- पेज 3 का शेष

परमात्म-प्यार में मग्न रहते थे

परमात्म प्यार में वे स्वयं को भूले रहते थे। अंतिम दिन भी जब उनसे पूछा कि बाबा, क्या डॉक्टर को बुलायें (बाबा को छाती में थोड़ा दर्द था) उन्होंने नशे में उत्तर दिया था- बच्चे, बाबा तो सुप्रीम सर्जन से बातें कर रहा है, डॉक्टर आकर क्या करेगा। अंतिम दिन वे ईश्वरीय नशे में खोये हुए व परमात्म-प्यार में मग्न थे। जितना प्यार उनका परमपिता से था, उतना ही प्यार उनके यज्ञ व उनकी ज्ञान मुरली से था। एक भी दिन उन्होंने क्लास मिस नहीं की थी। मुरली सुनाते हुए वे ज्ञान-डांस करते थे। वह उनका परम प्रियतम जो था। इस प्रभुप्रेम में वे संसार भूले रहते थे।

उनके वायब्रेशन्स पूर्णतः अलौकिक व सम्पूर्ण पवित्र थे

लोग उनके पास समस्याएं लेकर आते थे और मुक्त होकर जाते थे। रोते आते थे और हँसते जाते थे। भारीपन लेकर आते थे और हल्के होकर, प्रसन्न होकर बाहर निकलते थे। सभी का अनुभव होता कि जाकर बाबा से ये ये पूछेंगे परंतु वहाँ जाते ही मन इतना शांत हो जाता था कि या तो प्रश्न करना ही भूल जाते थे या स्वतः ही उत्तर पा लेते थे। बात सन् 1968 जून की है। बाबा अकेले एकांत में झोपड़ी में विराजमान थे। मैं बगीचे के बाहर खड़ा देख रहा था। ऐसा आभास हो रहा था कि यहाँ कोई महान तपस्वी बैठा है। झोपड़ी से जैसे कि शांति के सागर की शांति की लहरें चारो ओर फैल रही थीं। जिसको वे दृष्टि दे देते थे उनका चित्त शांत हो जाता था।

वे अति शक्तिशाली व महान लीडर थे

वे समस्याओं के आगे नहीं झुकते थे, वे समय की धारा को भी बदलने की शक्ति रखते थे। समय उनके आगे समर्पित हो गया था। सर्वशक्तिवान के बाद शक्ति सम्पन्न आत्मा में उनका ही स्थान है। कुछ भी हो गया, उन्होंने अपनी स्थिति को एकरस रखा। ऐसी दिव्य आभा से सम्पन्न थे बाबा हमारे... जिनके चरित्र में चमकता था सम्पूर्ण देवत्व...जिनका हर कर्म उनके पुण्यों की कहानी कहता था... जिनके मुख से सदा वरदान निकलते थे...जिनके सिर पर वे हाथ रख देते थे, उनके भाग्य का सितारा चमकने लगता था, उनके बुरे दिन समाप्त हो जाते थे, उनके बिगड़े हुए काम बन जाते थे...उनके जीवन से काले बादल छँट जाते थे। ऐसे थे हमारे अलौकिक पिता ब्रह्मा बाबा।